'लौटा फर्राटा': चीते की वापसी

12 दिसंबर, 2025

प्रमुख बिन्दु

- एक बड़े मांसाहारी पशु का वश्व का पहला अंतर-महाद्वीपीय स्थानांतरण सफलतापूर्वक पूरा हुआ, जिसमें नामीबिया और द क्षण अफ्रीका से **20** चीते **(2022-23)** भारत लाए गए
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वयं **17** सतंबर **2022** को पहले आठ चीते रिलीज कए
- दिसंबर **2025** तक, भारत में कुल **30** चीते हैं - **12** वयस्क, **9** उप-वयस्क, और **9** शावक - जिसमें **11** फाउंडर पशु और **19** भारत में जन्मे पशु शा मल हैं।
- भारतीय भू म पर जन्मी पहली चीता शावक मुखी खुद पांच स्वस्थ शावकों की मां बन गई है।
- कुनो के आस-पास के स्थानीय समुदायों के लए से से अ धक 450चीता मत्र, **380** प्रत्यक्ष रोजगार और **5** प्रतिशत इको-टूरिज्म राजस्व साझा कया गया।
- भारत **2032** तक **17,000** कलोमीटर में **60-70** चीतों की एक स्व संर क्षत-मेटापॉपुलेशन बनने की राह पर है और गांधी सागर वन्य जीव अभ्यारणय अगले चरण के लए तैयार है।

प्रस्तावना

2022 में सतंबर की एक सुबह नामीबिया के सवाना से आठ शानदार चीतों ने भारतीय भू म पर पांव रखा, यह एक ऐसी प्रजाति के पहले कदम थे जो लंबे समय से उपमहाद्वीप से गायब थी। मध्य प्रदेश के कुनो नेशनल पार्क में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में हुए इस ऐतिहा सक क्षण ने प्रोजेक्ट चीता की शुरुआत की, जो वश्व का पहला बड़े मांसाहारी पशु का अंतरमहाद्वीपीय - स्थानांतरण था। नवंबर **2025** तक आतेआते-: भारतीय भू म पर पैदा हुई पहली चीता मुखी, खुद पांच स्वस्थ बच्चों की मां बन गई है। यह न केवल जैवकीय पुनरुत्थान का प्रतीक है, बल्कि प्रकृति के नाजुक संतुलन पर इंसानी प्रबंधन का एक बड़ा सबूत है। **17** सतंबर, **2022** को पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रलाय की देखरेख में और राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्रा धकरण (एनटीसीए) की अगुवाई में आरंभ कया गया प्रोजेक्ट चीता, जैव व वधता की पुनर्बहाली के प्रति भारत की अटूट प्रतिबद्धता का प्रतीक है। **2013** की कार्ययोजना और सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों के आधार पर, इसमें ए शयाई चीते (ए सनोनिक्स जुबेटस, जिसे **1952** में भारत में वलुप्त घो षत कर दिया गया था) को एक खास प्रजाति के तौर पर फर से लाने की बात कही

गई है जिससे वशाल परि श्यों में इको सस्टम स्वास्थ्य को बढ़ावा दिया जा सके।

दिसंबर **2025** तक, कुनो में **30** चीते हैं। बोत्सवाना से भारत में आठ और चीते आने के साथ, यह प्रोजेक्ट उम्मीद की करण बना हुआ है और अपने वैज्ञानिक श्रम और राजनयिक कौशल के लए इसे अंतरराष्ट्रीय सराहना मली है। जो एक संरक्षण प्रयोग के तौर पर आरंभ हुआ था, वह पारिस्थितिक उम्मीद और देश की प्रतिबद्धता का एक वक्तव्य बन गया है: यह एक खं डत पारिस्थितिक लंक को बहाल करने, हमारी प्राकृतिक वरासत का सम्मान करने और बड़े मांसाहारी पशुओं को फर से जंगली वातावरण में अनुकू लत करने की वश्व भर की को शशों में अग्रणी भू मका निभाने का अवसर है।

ऐतिहा सक संदर्भ: वलुप्ति से पुनर्जागरण तक

भारत में चीते की गाथाएं पुरानी कहानियों में बुनी हुई है, जहाँ यह पशु शकार का पसंदीदा साथी रहा था। ए शयाई चीते, जो कभी अरब प्रायद्वीप से भारतीय उपमहाद्वीप तक निर्बाध वचरण करते थे, स्वतंत्र भारत से वलुप्त हो गए, जिससे घास के मैदान-सवाना बायोम में खालीपन आ गया। पुराने समय में, ए शयाई चीते पूरे भारत में, उत्तर में पंजाब से लेकर त मलनाडु में तिरुनेलवेली तक, और पश्चिम में गुजरात और राजस्थान से लेकर पूर्व में बंगाल तक, अलग-अलग खुली जगहों पर वचरण करते थे, जिसमें झाड़ीदार जंगल, सूखे घास के मैदान, सवाना और दूसरे शुष्क से लेकर अर्ध शुष्क क्षेत्र शा मल थे।

भारत में जंगली चीतों को आ खरी बार **1947** में देखा गया था , जब आज के छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले के साल (शोरिया रोबस्टा) जंगलों में तीन जानवरों को गोली मार दी गई थी। पांच साल बाद, **1952** में, इस प्रजाति को भारत में आ धकारिक तौर पर वलुप्त घो षत कर दिया गया, जिससे उपमहाद्वीप पर इसकी मूल उपस्थिति समाप्त हो गई।

भारत का मूल ए शयाई चीता बहुत अ धक आखेट, अवैध शकार, और को र्सेग के लए चीतों के इस्तेमाल होने की वजह से वलुप्त हो गया। खेती की वजह से रहने की जगह का व्यापक स्तर पर नुकसान, शकार में कमी, मौसम का दबाव और इस प्रजाति की कम पुनर्जनन दर और निम्न आनुवं शक आधार ने उनके वलुप्त होने की गति को और तीव्र कर दिया।

एक वशेषज्ञ स मति के समर्थन के बाद, **24** गांवों **(1,545** परिवारों) को दूसरी जगह बसाने के पश्चात, कुनो एनपी को सबसे अच्छी रीइंट्रोडक्शन साइट के तौर पर चुना गया , जिससे चीतों के लए लगभग **6,258** हेक्टेयर, अक्षुण्ण घास के मैदान सृजित कए गए ।

2022 तक, स्पीशीज़ रिकवरी के लए कन्वेंशन ऑन बायोलॉजिकल डायव र्सटी (सीबीडी) से जुड़ी कार्यनीतियों से प्रोत्साहित होकर, भारत ने इस योजना को कार्रवाई में बदल दिया। इस परियोजना का उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र सतत वकास लक्ष्य **15** (ज़मीन पर जीवन) के अनुरूप है, जो भारत को अंतर सीमा संरक्षण के ज़रिए जैव व वधता के नुकसान को ठीक करने में अग्रणी देश बनाता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का व्यक्तिगत वजन और निरंतर प्रोत्साहन प्रोजेक्ट चीता के पीछे प्रेरक शक्ति रहा है, जिसने दशकों पुराने सपने को जीती-जागती सच्चाई में बदल दिया है। **2022** कार्य योजना बनाने और वश्व के पहले अंतर महाद्वपीय चीता स्थानांतरण-को आगे बढ़ाने से लेकर, **17** सतंबर **2022** को कुनो नेशनल पार्क में खुद पहले आठ नामीबियाई चीतों को छोड़ने तक, वह हर चरण में पूरी तरह से जुड़े रहे हैं। उन्होंने नामीबिया **(**जुलाई **2022)**

और द क्षण अफ्रीका **(**जनवरी **2023)** के साथ उच्च स्तरीय समझौता ज्ञापन करवाए, मन की बात के ज़रिए लोगों को चीतों का नाम रखने के लए आमंत्रित कर बुलाकर देश को जोड़ा, और **2023** में पहले भारतीय शावकों के जन्म और नवंबर **2025** में ऐतिहा सक दूसरी पीढ़ी के शावकों के जन्म जैसी उपलब्धियों को निरंतर रेखां कत कया। दिसंबर **2025** तक, भारत में कुल **30** चीते हैं **- 12** बड़े, **9** छोटे और **9** शावक **-** जिनमें **11** फाउंडर स्टॉक और **19** भारत में जन्मे चीते शा मल हैं।

मशन लाइफ और भारत के जी**20** "एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भ वष्य" की सोच से जोड़कर , प्रधानमंत्री श्री मोदी ने प्रोजेक्ट चीता को वज्ञान प्रेरित, समुदाय समावेशी रीवाइल्डिंग का वैश्विक प्रतीक बना दिया है, वह खुद इसकी प्रगति की निगरानी कर रहे हैं और यह सुनिश्चित कर रहे हैं क भारत में सात दशकों से खामोश चीते की दहाड़, एक बार फर इसके पुराने घास के मैदानों में गूंजे।

ति थ	घटना क्रम / उपलब्धियां
17 सतंबर **2022**	नामीबिया से भारत लाए गए **8** अफ़्रीकी चीतों **(5** मादा, **3** नर**)** के पहले बैच को मध्य प्रदेश के कुनो नेशनल पार्क में क्वारंटाइन बाड़ों में छोड़ा गया।
फरवरी **2023**	दूसरा बैच: भारत और द क्षण अफ्रीका के बीच समझौता ज्ञापन के तहत द क्षण अफ्रीका से **12** चीते भेजे गए।
2023 (प्रथम **6** महीने)	भारतीय भू म पर पहली बार जन्म: बाहर से लाए गए चीतों के बच्चे पैदा हुए, **70** साल से अ धक समय में भारत में पहली बार चीतों का जन्म।
2024 के बाद	अनुकूलन बोमास से खुले जंगल में चरण-वार रिलीज़ शुरू;

	अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सॉफ्ट-रिलीज़ प्रोटोकॉल का अनुसरण कया गया।
2024-25	नए चीतों को (जैसे बोत्सवाना से) लाने और कुनो के अलावा दूसरी जगहों पर भी इसे बढ़ाने के कार्यक्रम का वस्तार। नवंबर **2025** में, बोत्सवाना ने भारत को आठ चीते गफ्ट कए।

उद्देश्य और कार्यनीतिक संरचना

प्रोजेक्ट चीता में कूनो गांधी सागर परि श्य में- **17,000** कलोमीटर में **60-70** चीतों की एक व्यवहार्य आबादी का निर्माण, खुले जंगलों और घास के मैदानों की पुनर्बहाली, साथ ही बेहतर कार्बन संक के जरिए जलवायु के असर को कम करना शा मल है। प्रोजेक्ट चीता के तहत चीते को एक प्रमुख/व्यापक प्रजाति के तौर पर निर्धारित कया गया है। आ धकारिक योजना का उद्देश्य उपे क्षत घास के मैदानों और अर्द्धशुष्क-इको सस्टम को बहाल करना है जिससे शकार करने वाली प्रजातियों और घास के मैदानों पर -निर्भर दूसरी जैव व वधता को लाभ हो।

चरणबद्ध कार्यान्वयन निम्न ल खत के माध्यम से पारिस्थितिकी ववेकशीलता सुनिश्चित करता है:

- **3,200** कलोमीटर तक फैले कुनो नेशनल पार्क के **748** कलोमीटर के मध्य क्षेत्र में फाउंडर स्टॉक लाया गया। लगभग **12-14** जंगली चीतों जो प्रजनन आयु, अनुवां शक रूप से व वध, रोग मुक्त, शकारियों से सावधान, काबिल शकारी और समाजिक रूप से अनुकूल थे, उन्हें पहले पांच सालों के लए फाउंडर स्टॉक के तौर पर द क्षण अफ्रीका, नामीबिया, या दूसरे अफ्रीकी देशों से लाया गया, और आवश्यकता के हिसाब से और भी आयात कए गए।
- कुनो से लगभग **300** कलोमीटर दूर गांधी सागर वन्य जीवन अभ्यारण्य (**368** कलोमीटर सैंक्चुअरी, **2,500** कलोमीटर संभा वत हैबिटैट) के साथ मेटापॉपुलेशन लंकेज। दीर्घका लक लक्ष्य कुनो- गांधीसागर परि श्य में **60-70** चीतों के मेटापॉपुलेशन का निर्माण करना है, इसके बाद रेस्टोरेशन के उपाय, शकार की उपलब्धता और वैज्ञानिक प्रबंधन सुनिश्चित करना है।
- आत्मनिर्भर वकास: अगर प्राकृतिक मृत्युदर, जन्म और साव धक अनुपूरण को मलाकर, लगभग **5** प्रतिशत की शुद्ध सालाना वृद्ध दर बनी रहती है, तो रिलीज़ हुई आबादी के लगभग **15** सालों में अपनी वहन क्षमता तक पहुंचने की उम्मीद है।

बजटीय सहायता इस संकल्प को रेखां कत करती है: प्रथम चरण के लए **39** करोड़ रुपये (यूएसडी **5** म लयन डॉलर) , जिसे केन्द्र प्रायोजित स्कीम प्रोजेक्ट टाइगर में शा मल कया गया है, जिसमें शकार के स्थानांतरण और अवसंरचना के लए अरितक्त आवंटन शा मल हैं। निगरानी अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (आईयूसीएन) दिशानिर्देशों (**2013**) का पालन करती है, जिसमें जीपीएस कॉलर, कैमरा ट्रैप और दूरी के नमूने (शकार और आवास की निगरानी के लए **734-816** कमी ट्रांसेक्ट) का उपयोग कया जाता है।

उपलब्धि: आंकड़ा आधारित सफलता

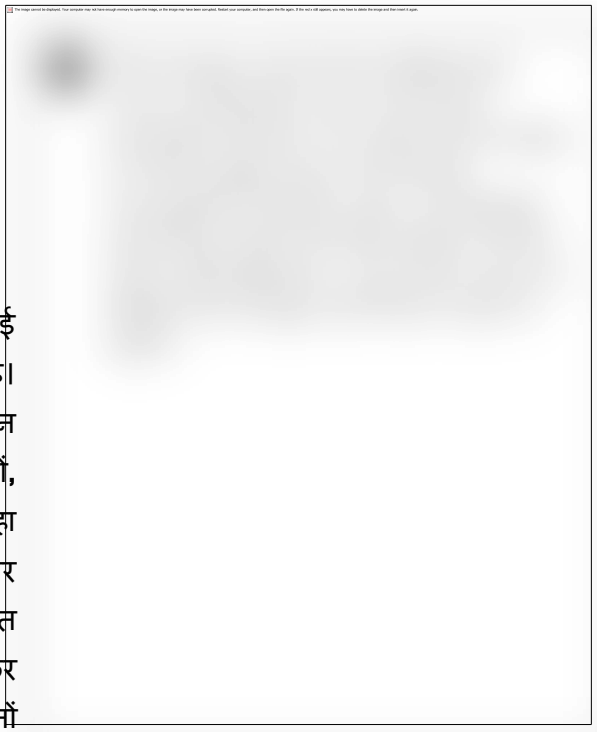

प्रोजेक्ट चीता ऐसी सफलताओं से भरा है जिन्हें गना जा सकता है, जिसमें नवाचार और मज़बूती का संयोग है। फरवरी **2023** तक **20** चीतों (**8** नामीबिया से: **5** मादा **3** नर; **12** साउथ अफ्रीका से: **5** मादा, **7** नर) को इं डयन एयर फ़ोर्स के **C-17** ग्लोबमास्टर्स से लाया गया, जो बिना कसी व्यवधान के **7900** कमी से अ धक की दूरी तय कर एक शानदार कार्य कया।

शीघ्र प्रजनन सबसे बेहतर जै वक संकेत में से एक है क कोई प्रजाति अपने नए माहौल में अच्छी तरह से अनुकू लत हो गई है। कुनो में चीतों के स्थान परिवर्तन के तुरंत बाद उनका सफल प्रजनन यह दिखाता है क वहां का माहौल उनकी ज़रूरी पर्यावरणीय ज़रूरतों, उपयुक्त शकार, सही आवासन और कम तनाव स्तर को पूरा कर रहा है। यह शुरुआती प्रजनन सफलता आवासन के अनुकूल होने और पर्यावरणीय स्थायित्व का एक मज़बूत निशान है, जो यह सुनिश्चित करता है क प्रजनन रणनीति जैसा सोचा गया था, वैसा ही कार्य कर रहा है। इससे पता चलता है क कुनो सर्फ़ कम समय के लए चीतों को सहयोग नहीं कर रहा है, बल्कि इसमें लंबे समय तक एक

स्वस्थ, जी वत रहने लायक अनुकूल आवासन बनाए रखने की क्षमता है।

गर्भाधान में शा मल हैं:

- ज्वाला (नामीबियाई मादा): दो बार गर्भाधान में **8** शावक (मार्च **2023** - भारत में पहला जन्मा शावक और जनवरी **2024**)
- आशा (नामीबियाई): **3** शावक (जनवरी **2024**)
- गा मनी (द क्षण अफ़्रीकी): **6** शावक (मार्च **2024**)
- निरवा (नामीबियाई मादा): पहले गर्भाधान में **2** शावक, भारत में छठा गर्भाधान (नवंबर **2024**); उसके दूसरे गर्भाधान में **5** शावक, भारत में **8**वां गर्भाधान (अप्रैल **2025**)
- वीरा (नामीबियाई मादा): पहले गर्भाधान में **2** शावक, भारत में **7**वां गर्भाधान (फरवरी **2025**)
- मुखी (भारतीय मूल की): **5** शावक (नवंबर **2025**), दूसरी पीढ़ी के लए एक जेनेटिक उपलब्धि

मादा आशा **121** वर्ग कमी में रहती है, जब क उसके तीन कम उम्र के नर शावक **1,508** वर्ग कमी का बहुत बड़ा क्षेत्र इस्तेमाल करते हैं। नर अग्नि-वायु का आवास क्षेत्र **1,819** वर्ग कमी है। मादा गा मनी और उसके चार कम उम्र के

शावक **6,160** वर्ग कमी के बड़े क्षेत्र में रहते हैं, और मादा ज्वाला अपने चार कम उम्र के शावक के साथ **3,139** वर्ग कमी का आवास क्षेत्र इस्तेमाल करती है।

क्या आप जानते हैं?

मध्य प्रदेश में कूनो राष्ट्रीय उद्यान को देश के पहले चीता पुनर्वास स्थल के रूप में चुना गया था क्योंकि यह आदर्श आवास, प्रचुर मात्रा में शिकार और न्यूनतम मानव अशांति प्रदान करता है, पहले के गांवों के स्थानांतरण के लिए धन्यवाद। भारतीय वन्यजीव संस्थान (डब्ल्यूआईआई) और राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (एनटीसीए) की कार्य योजना ने कूनो राष्ट्रीय उद्यान को चीतों के लिए आदर्श आवास के रूप में पहचाना है, जिससे यह 70 से अधिक वर्षों के बाद इन चीतों (बड़ी बिल्लियों) के लिए एक आदर्श आवास बन गया है।

समुदाय और आजी वका सशक्तिकरण: संरक्षण में भागीदार

प्रोजेक्ट चीता सबको साथ लेकर चलने वाला संरक्षण है। **80** गांवों में **450** से ज़्यादा *"चीता मत्र"* जागरूक एंबेसडर के तौर पर काम करते हैं, और **2,200** छात्रों के लए **150** जागरूकता *सम्मेलन* और **16** *अनुभूति कैंप लगाते हैं* । रोजगार में बढ़ोतरी: **80** स्थानीय लोगों को चीता ट्रैकर के तौर पर, **200** को पेट्रो लंग के लए *" सुरक्षा श्र मक" के तौर पर* , और स्थानीय युवाओं को सफारी गाइड के तौर पर ट्रेनिंग दी गई।
प्रर्यायवरणीय वकास: सड़कें, चेक डैम, सफ़ाई, चीता ज़ोन के **100+** गांवों में फैली हुई है, जो मलकर रहने को बढ़ावा देती है। यह मॉडल, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम-जैव- व वधता सम्मेलन (यूएनईपी-सीबीडी) फ्रेमवर्क में दिखता है, जो सामुदायिक आधारित जैव व वधता में होने वाले फ़ायदों का उदाहरण है।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग: साझा प्रबंधन का एक स्वर

प्रोजेक्ट चीता वैश्विक वन्यजीव कूटनीति में एक उपलब्धि है, जो भारत और अफ्रीकी देशों के बीच गहरे, औपचारिक सहयोग पर बना है। भारत और द क्षण अफ्रीका के बीच समझौता के अंतर्गत जनवरी **2023** में हस्ताक्षर कया गया। दोनों देशों ने चीतों को स्थान परिवर्तन, रखवाली, प्र शक्षण और तकनीकी हस्तांतरण में लंबे समय की सहभा गता के लए प्रतिबद्ध कया, यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसे निरंतरता और संबद्धता सुनिश्चित करने के लए प्रत्येक पांच वर्षों में समीक्षा की जाती है। इसके बाद वर्ष **2022** में भारत ने नामीबिया से पहली बार चीतों को लाया गया, जिससे प्रोजेक्ट चीता दोनों महाद्वीप के बीच वश्व का पहला बड़ा कार्निवोर बन गया। नामीबिया और साउथ अफ्रीका की वशेषज्ञ टीमों ने मलकर पकड़ने, क्वारंटाइन करने, एयर लफ्ट करने और छोड़ने के ऑपरेशन कए, जब क इं डयन वाइल्डलाइफ मैनेजर्स को चीता को संभालने, देख-रेख करने, रे डयो-कॉलरिंग और छोड़ने के बाद के प्रबंधन में काफी व्यवहारिक, प्र शक्षण मली। जेनेटिकली आनुवं शक व वध साउथ अफ्रीकी आबादी से चीतों को भारत में लाकर चीतों की आबादी को और समृद्ध करता है। यह वैश्विक संरक्षण जिम्मेदारी के साथ संरे खत करता है। भारत ने वैश्विक जैव व वधता मंच में अपने नेशनल सब मशन में प्रोजेक्ट चीता को पुनः बहाली और प्रजाति पुनः प्राप्ती के लए एक मॉडल के तौर पर भी पेश कया है, जिससे इस पहल का बहुचरित्र मजबूत होता है। यह मलकर काम करने वाला फ्रेमवर्क, जो फॉर्मल एग्रीमेंट, जॉइंट फील्ड ऑपरेशन और बार-बार होने वाले प्र शक्षण का दला-बदली पर आधारित है, प्रोजेक्ट चीता को सर्फ़ भारत के कंज़र्वेशन की को शश के तौर पर ही नहीं, बल्कि एक वैश्विक संरक्षण मशन के तौर पर भी दिखाता है, जो यह दर्शाता है क वज्ञान की मदद से खतरे में पड़ी प्रजातियों को कैसे फर से संर क्षत कया जा सकता है।

निष्कर्ष: वैश्विक प्रशंसा का निमंत्रण

इंटरनेशनल बिग कैट एलायंस

भारत ने इंटरनेशनल बिग कैट एलायंस (आईबीसीए) की स्थापना के माध्यम से अपने वैश्विक संरक्षण नेतृत्व को बढ़ाया है, जो प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की एक प्रमुख पहल है, जो चीता सहित दुनिया की सात बड़ी बिल्ली प्रजातियों के भविष्य की सुरक्षा के लिए समर्पित है। वर्ष 2027-28 तक पांच वर्षों के लिए 150 करोड़ रुपये के बजटीय सहयोग के साथ भारत में मुख्यालय है। इसे औपचारिक रूप से प्रधानमंत्री द्वारा प्रोजेक्ट टाइगर के 50 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में 9 अप्रैल 2023 को शुभारंभ किया गया था। रेंज देशों के बीच अंतरराष्ट्रीय सहयोग, साझा अनुसंधान, क्षमता निर्माण और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को मजबूत करने के लिए डिज़ाइन किया गया, यह गठबंधन भारत को बिग कैट संरक्षण और सहयोगी पारिस्थितिक प्रबंधन के लिए एक वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित करता है। इस व्यापक अंतरराष्ट्रीय ढांचे के अंतर्गत प्रोजेक्ट चीता को शामिल करके, भारत सहयोगी पारिस्थितिक प्रबंधन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है और प्रजातियों के पुनरुद्धार के लिए एक एकीकृत वैश्विक रणनीति प्रस्तुत करता है, यह प्रदर्शित करता है कि कैसे विज्ञान आधारित, अंतरराष्ट्रीय साझेदारी के माध्यम से विलुप्त होती प्रजातियों को संरक्षित किया जा सकता है।

प्रोजेक्ट चीता पुनरारम्भ से कहीं अ धक है; यह पारिस्थितिक सद्भाव के लए भारत का गीत है, जहां वज्ञान, कूटनीति और समुदाय एक वन्यजीव को संतु लत करने के लए एकजुट होते हैं। भारत में फलते-फूलते चीतों के साथ, यह दुनिया को इस पुनर्जागरण का जश्न मनाने के लए आमंत्रित करता है, जो जैव

व वध देशों के लए एक मॉडल है, जहां वलुप्त हो चुकी दहाड़ फर से जी वत हो जाती है। उम्मीद है क यह कहानी-भारत के घास के मैदानों में जहां आशा शाश्वत रूप से दौड़ती है- प्रेरणा का संदेश देगी।

संदर्भ:

प्रेस सूचना ब्यूरो (पीआईबी)

- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2192109&reg=3&lang=2
- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1860055&reg=3&lang=2
- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2189733
- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1899802
- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1958158&reg=3&lang=2
- https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2189221&reg=3&lang=2

राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्रा धकरण

- https://ntca.gov.in/assets/uploads/Reports/Others/Action_Plan_Cheetah_Introduction_Dec21.pdf
- https://ntca.gov.in/assets/uploads/Reports/Others/GWLS_Cheetah_Action_PLan_2024_Low_Res.pdf
- https://ntca.gov.in/assets/uploads/Reports/Others/Project_Cheetah_Annual_Report.pdf
- https://ntca.gov.in/assets/uploads/Reports/Others/cheetah_annual_report_2023_2024a.pdf
- https://ntca.gov.in/assets/uploads/Reports/Annual_Reports/Annual_report_english_2022_23.pdf
- https://ntca.gov.in/project-cheetah-kuno-np/
- https://ntca.gov.in/assets/uploads/Reports/AITM/Cheetah_narrow_booklet-6x11-lowre.pdf
- https://ntca.gov.in/wp-content/uploads/2025/07/Stripes_Vol14_1_Jul25_compressed.pdf

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

- https://moef.gov.in/storage/tender/1720685196.pdf

भारत का सर्वोच्च न्यायालय

- https://api.sci.gov.in/jonew/judis/40278.pdf

जै वक व वधता सम्मेलन

- https://www.cbd.int/doc/world/in/in-nbsap-01-p3-en.pdf

चीता.ऑर्ग

- https://cheetah.org/wp-content/uploads/2022/09/Cheetah-Action-Plan-20-Dec-2021.pdf

पीएम इं डया

- https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/cabinet-approves-establishment-of-international-big-cat-alliance-ibca

पीआईबी रिसर्च

***

पीके/केसी

(Release ID: 2202894